Course --M.A ,Education,part -2

Paper -11th, Educationl Administrative Practice

Prepared by -Dr Meena Kumari

Topic -- Bureaucratic Theory

नौकरशाही सिद्धांत

1) प्रस्तावना --- पारंपरिक प्रबंधन के सिद्धांत में नौकरशाही सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह सिद्धांत मैक्स वेबर के द्वारा दिया गया था ।मैक्स वेबर एक समाजशास्त्री थे ।उनके सिद्धांतों पर आज भी संगठन चलाए जाते हैं ।भारत ही नहीं विश्व में वर्तमान समय में भी वेबर के सैद्धांतिक मॉडल पर बड़े-बड़े संगठन चलाए जा रहे हैं। यह ठीक है कि मानवीय संबंधों पर बल देने वाले युग में व्यक्ति के महत्व को सर्वोपरि माना गया। अतः संगठन में मानव मूल्य, उनकी महता ,उनकी सहभागिता ,समानता पर बल दिया जाने लगा। परंतु कार्यदक्षता के लिए निर्मित सिद्धांतों की दृष्टि से आज भी बेवर का सिद्धांत प्रमुख है।

2) नौकरशाही सिद्धांत -- विश्व के लगभग सभी विकासशील देशों में नौकरशाही सिद्धांत का उपयोग प्रबंधन प्रशासन में इसकी उपयोगिता के आधार में पर की जाती है। मैक्स वेबर के ब्यूरोक्रेटिक सिद्धांतों में निम्नलिखित सिद्धांत उपयोगी है-

१) सुनिश्चित नियम -- इस सिद्धांत के अनुसार संगठन के कर्मचारी, अधिकारियों को निश्चित नियमों के अनुसार चलना चाहिए। यह नियम परस्पर समूह की सहमति के आधार पर तय होते हैं ।परंतु तय होने के बाद संगठन के सभी कर्मचारियों को इसका पालन करना पड़ता है ।ब्यूरोक्रेसी नियमों को बनाने में तथा लागू करने में विश्वास करती है ।संगठन के सभी व्यक्तियों का

अधिकार और कार्यक्रम सुनिश्चित होते हैं ।यह नियम सभी पर समान रूप से लागू होता है तथा समस्याओं के समाधान में योगदान करता है।

२) विशेषताओं के आधार पर श्रम विभाजन - संगठन की जटिलता ने संगठन में विशेषज्ञों की आवश्यकता को अनिवार्य बना दिया है। सेआज हर संगठन विशेषज्ञों की नियुक्ति करता है। मैक्स वेबर ने इस संबंध में तीन बातों पर बल दिया ,प्रथम उन कार्यों का स्पष्ट निर्धारण जो प्रत्येक व्यक्ति संपन्न करते हैं और दूसरा उन कार्यों को संपन्न करने के लिए अधीनस्थ कर्मचारियों की आवश्यकता एवम् अधिकार प्रदान करना तथा अंतिम अनिवार्य साधनों की निश्चित व्याख्या करना ,जिनका वो प्रयोग निश्चित दशाओं में करेंगे।
४)

३) पदसोपान-- सभी संगठन में पदसोपान क्रमिकता के नियमों के अनुसार होता है। अर्थात प्रत्येक पद एक कार्यालय पद के नियम के अंतर्गत नियत्रित होते हैं। वह यह भी प्रतिपादित करता है कि एक सर्वोच्च पदाधिकारी के अंतर्गत संपूर्ण प्रशासनिक कर्मचारी स्पष्ट तौर पर यह परिभाषित पदों की कविता से संगठित है।
४) तकनीकी ज्ञान के आधार पर नियुक्ति एवं प्रोन्नति -- मैक्स वेबर का मानना है कि किसी भी कार्यालय के व्यवहार को नियमित करने के लिए स्पष्ट तकनीकी, नियम, मापदंडों की आवश्यकता होती है। इसके लिए कर्मियों को प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक होता है।अतः वही व्यक्ति जो किसी पद विशेष के लिए तकनीकी दृष्टि से प्रशिक्षित है, वहीं नियुक्ति की दृष्टि से योग होता है।

५) निर्वैयक्तिकरण --सभी नियमों तकनीकी होते और इस स्थिति विशेष में लागू होते हैं! ऑफिशियल तथा संगठन के कार्यों में अधिकारी की अव्यक्तिक रूप से व्यवहार करना चाहिए। उसे निजी राय ,दृष्टिकोण बनाने का अधिकार नहीं है। उदाहरणार्थ यदि किसी संपत्ति अथवा ऐसी समस्या जो किसी का व्यक्तिगत नहीं होकर संगठन से संबंध रखता है, तो उसको व्यक्तिगत रूचि पर ध्यान न देकर संगठन के लाभ और हानि के दृष्टि को देखते हुए निर्णय लेना चाहिए!

६) लिखित आदेश तथा लिखी आलेखों पर बल--- ब्यूरोक्रेसी सिद्धांत के अंतर्गत मौखिक कार्यशैली को पसंद नहीं किया जाता है। सभी प्रशासनिक कार्यवाही लिखित में होनी चाहिए तथा इसका सुनिश्चित आलेखन होना चाहिए। प्रत्येक कार्रवाई किसी नियम के अधीन है इसका भी उल्लेख होना चाहिए। भारत में प्रमुख रूप से ब्यूरोक्रेटिक मॉडल पर कार्य होता है।परंतु पूरी तरह से नौकरशाही के सिद्धांतों की भावना के अनुरूप प्रशासन देखने में नहीं आता। इसी कारण संगठन में लालफीताशाही ,व्यक्तिगत रूचि,हस्तक्षेप इत्यादि देखने को मिलता है।

उपर्युक्त सिद्धांतों को जब हम देखते हैं तो नौकरशाही सिद्धांत
के साथ प्रमुख तत्वों का पता चलता है --

- नियम-- बेवर के सिद्धांत के अनुसार कानूनी अधिकार के मूल गुणों में नियमों के द्वारा कार्यालय कार्यों को संपन्न किया जाता है।इन नियमो में निरंतर संगठित करने के लक्षण मौजूद होते हैं। ऐसे नियम जो कार्यालय दफ्तर के व्यवहार का संचालन करते हैं वह तकनीकी नियम या मानक माने जाते हैं।

- व्यक्ति निरपेक्ष व्यवस्था-- इसके अनुसार आदर्श नौकरशाही की रचना में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्ति निरपेक्ष रूप से पदाधिकारी के द्वारा दिए आदेश , कार्यों को संपन्न करने में तथा उसके द्वारा दी गई आज्ञा का पालन करने पर बल देता है।

- दक्षता के दायरे --इस सिद्धांत के अनुसार दक्षता विभिन्न दायरों में अंतर्निहित होते हैं । पहला इसके अंतर्गत कार्यपालन के दायित्व का दायरा व्यवस्थित कार्य विभाजन के भाग की तरह ही चिन्हित होता है ।दूसरे के दायरों के अंतर्गत उन कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए आवश्यकता अनुसार अधिकारी के साथ पदाधिकारी एवं कर्मचारी की भी नियुक्ति की जाती है। तीसरे दायरे के अंतर्गत स्पष्ट तौर पर परिभाषित दबाव के साधन जो उनके प्रयोग को निश्चित दशाओं में जुड़े होते हैं।

- लिखित अभिलेख-- नौकरशाही सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण तत्व कानून ,निर्णय और नियम को अभिलिखित किया जाना है।अभिलेख प्रशासन को लोगों के प्रति जवाबदेह बनाते हैं और भविष्य की क्रिया के लिए तैयार संदर्भ देते हैं ।

- पद सोपान-- पदों का संगठन कर्मिकता के नियमों के अनुसार होता है। अर्थात प्रत्येक पद एक कार्यालय पद के नियम के अंतर्गत नियत्रित होते हैं। इन पदों का एक ऊपर से नीचे एक निश्चित क्रम होना चाहिए जो अधिकारों तथा निर्देशों की। तरफ इगित करता है।

  व्यक्तिगत और लोकहित-- इस सिद्धांत का आदर्श प्रकार में उपयोगिता और प्रासगिकता का प्रमुख स्थान है ।जहां उत्पादन के साधन या प्रशासन के स्वामित्व को प्रशासनिक कर्मचारियों से अलग करने की प्रार्थना करता है। वही वह पदाधिकारियों द्वारा पद् की वैधता के निजीकरण की संपूर्ण अनुपस्थिति की भी प्रार्थना करता है। कार्यालय अधिकारियों पर उनकी परिस्थितियों के दुरुपयोग को रोकने के लिए ऐसी जांच आवश्यक है ।यह किसी भी व्यवस्था के लिए प्रासगिक है।

अब तो नौकरशाही के सिद्धांतों में आज के महत्व को देखकर आवश्यक संशोधन एवं समायोजन की आवश्यकता है।प्रबंधन में यंत्र व्यवहार ना कर छात्रों शिक्षक तथा इससे जुड़े सभी कर्मचारियों के साथ व्यक्तिगत विभिन्नता परिस्थिति समस्या के अनुरूप आवश्यक सामंजस्य करना चाहिए नियम संगठन के विकास के लिए होते हैं तथा संगठन को गति को रोकने के लिए नहीं होते हैं। नौकरशाही सिद्धांत संगठन के अंदर एक प्रणाली तथा नियंत्रण का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है और यह आज के दिन में भी प्रासगिक है।